विषय– भूगोल
उपविषय– प्राथमिक क्रियाऐं

प्राथमिक क्रियाऐं

प्राथमिक क्रियाओं से तात्पर्य जब मनुष्य अपनी प्रथम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आजीविका का निर्वहन करता है, तो प्राथमिक क्रियाऐं कहलाती हैं। अर्थात् दूसरे शब्दों में मनुष्य अपने वातावरण व प्रकृति से अपने भरण पोषण के लिए कार्य करता हैं तो प्राथमिक क्रियाऐं कहते हैं। इसके अन्तर्गत आखेट, भोजन संग्रह, वनों से लकडी काटना,खनन एवं कृषि कार्य सम्मिलित किये जाते हैं।

1– आखेट एवं भोजन संग्रह– प्राचीन समय में मनुष्य अपने जीवन निर्वाह के लिए पशुओं का शिकार करता था तथा अपने क्षेत्र के आस–पास से कंदमूल फलों को एकत्रित करता था तथा तटवर्ती क्षेत्र के लोग मछली पकडने का कार्य करते थे।जिसमें वे पत्थर या लकडी के बने औजारों का प्रयोग करते थे।

भोजन संग्रह का कार्य दो क्षेत्रों में किया जाता है।–

1–उच्च अक्षांश का क्षेत्र, जिसमें उत्तरी कनाडा, उत्तरी यूरेशिया एवं दक्षिणी चिली आते हैं।

2– निम्न अक्षांश के वे क्षेत्र, जिसमें अमेजन बेसिन, उष्ण कटिबन्धीय अफ्रीका, आस्ट्रेलिया एवं दक्षिण पूर्वी एशिया का आन्तरिक प्रदेश आता है।

आधुनिक समय में भोजन संग्रह का कार्य व्यावसायिक हो गया है। कुछ क्षेत्रों के लोग कीमती पौधों की पत्तियॉ,छाल, औषधि पौधों का बाजार में बेचने का कार्य करते हैं। इसमें छाल से कुनैन का उपयोग, कार्क बनाना, दवाईयॉ, पेय पदार्थ, रेशे से कपडा बनाना, कुछ फलों को भोजन एवं तेल के रूप में उपयोग करना है। उदाहरण के लिए जेपोटा वृक्ष के दूध से च्विंग्गम बनाये जाते है जिसे चिकल कहते हैं।

1– पशुचारा – आखेट करने वाले लोगो ने जब यह महसूस किया कि केवल आखेट से ही उनका जीवन निर्वाह नही हो सकता है। तब उन्होने पशुपालन के बारे में सोचा। तथा आस–पास के जंगली पशुओं को पालना शुरू किया। पशुपालन उनके कार्य के आधार पर निम्न दो प्रकार का होता है।

(क)– चलवासी पशुचारण– प्राचीन समय में अपने जीवन निर्वाह के लिए पशुचारक अपने भोजन, वस्त्र, औजार इत्यादि के लिए पशुओं पर निर्भर रहता था। ये पशुचारक पानी एवं घास के क्षेत्रों की उपलब्धता के आधार पर अपने पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे। पशुचारकों के अपने निश्चित चारागाह होते थे। जलवायु के अनुसार अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग पशु पाले जाते थे। उष्ण कटिबन्धीय अफ्रीका में गाय,बैल प्रमुख पशु हैं। सहारा एवं एशिया के मरूस्थलों में भेड,बकरी एवं ऊॅट पाले जाते हैं। तिब्बत एवं एण्डीज के पर्वतीय भागों में याक एवं लामा आर्कटिक एव उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्रों में रेंडियर पाला जाता है। पशुचारक चारागाहों के लिए लम्बी दूरियॉ तय करते हैं। गर्मियों में ये पर्वतीय भागों में चले जाते हैं, जबकि शीत ऋतु में मैदानी भागों में आ जाते हैं, जिसे ऋतु प्रवास कहते हैं। भारत के हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में गुज्जर,बकरवाल, गद्दी व भूटिया लोग ग्रीष्मकाल में मैदानी भागों से पर्वतीय भागों में चले जाते हैं। वर्तमान में चलवासी पशुचाारकों की संख्या कम होती जा रही है।

प्रस्तुतकर्ता– जगदीश प्रसाद (प्रवक्ता भूगोल) बी0डी0टी0रा0इ0का0गुरना पिथौरागढ, उत्तराखण्ड

(ख)– वाणिज्य पशुचारण–वाणिज्य पशुपालन व्यवस्थित एवं पूँजीप्रधान है। इसमें फार्म स्थाई रूप से बनाये जाते है। फार्म को कई भागों में बॉटा जाता है,। जब एक क्षेत्र में चारा समाप्त हो जाता हैं तो पशु को दूसरे क्षेत्र में ले जाया जाता है। इसमें पशु की चिकित्सा तथा उचित देखरेख की जाती है।

पशुपालन में एक फार्म में एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं। इनमें भेड,बकरी,गाय,बैल और घोडे होते हैं। इनसे मॉस, दूध,खाल का प्रयोग किया जाता है। यहॉ पर पशुओं के प्रजनन तथा उनकी नस्ल सुधार और बीमारी नियन्त्रण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

विश्व में न्यूजीलैंड, अर्जेन्टाइना, यूरूग्वे , आस्ट्रेलिया तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में व्यापारिक पशुपालन का अधिक प्रचलन है।

कृषि

किसी क्षेत्र विशेष की भौगोलिक स्थितियॉ,जलवायु, आर्थिक, सामाजिक दशायें कृषि पर निर्भर करती हैं। कृषि की प्रमुख विधियॉ निम्न हैं।

1– आदिकालीन निर्वाह कृषि – इस कृषि को अपने जीवन निर्वाह के लिए करता है। इसे स्थानान्तरण कृषि भी कहते हैं। इस प्रकार की कृषि अफ्रीका, दक्षिण एवं मध्य अमेरिका का उष्ण कटिबन्धीय भाग एवं दक्षिण पूर्वी एशिया में की जाती है।

इस प्रकार की कृषि में खेतों की वनस्पति को जला दिया जाता है। जली हुयी राख खाद का कार्य करती है। इसमें खेतों का आकार छोटा होता है, और पुराने औजारों कुदाल,फावडे से कृषि कार्य किया जाता है। कुछ साल के बाद इस खेत को छोडकर नये क्षेत्र में चले जाते हैं। इसलिए इसे स्थानान्तरण या झूमन कृषि भी कहा जाता है।

2– गहन निर्वाह कृषि – इस प्रकार की कृषि एशिया के मानसून वाले क्षेत्रों में की जाती है। यह दो प्रकार की होती है।

(क)– कुछ क्षेत्रों में चावल प्रमुख रूप से बोया जाता है, जहॉ जनसंख्या घनत्व अधिक होता है। इसमें पूरा परिवार कृषि में लगा रहता है। इसमें गोबर की खाद एवं हरी पत्तियों का उपयोग खाद के लिए किया जाता है।

(ख)– इन क्षेत्रों में चावल न बो कर गेहूँ, सोयाबीन,जौ बोया जाता है। इन क्षेत्रों में ऊँचाई के कारण चावल नही बोया जाता है। जैसे– सिन्धु गंगा के पश्चिमी भाग में गेहूँ , दक्षिण व पश्चिमी शुष्क भाग में ज्वार, बाजरा बोया जाता है।

3– रोपड कृषि– यूरोपीय लोगो ने रोपड कृषि को बढावा दिया, इसमें चाय,कॉफी,कोको,रबड, कपास,गन्ना एवं अनानास के पौधे लगाये गये। इसमें कृषि खेतों का आकार बडा होता है, और अधिक पूँजी और उच्च तकनीकी विधि से कृषि की जाती है।

4– विस्तृत वाणिज्य एवं अनाज कृषि– इस प्रकार की कृषि मध्य अक्षांशों के अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में की जाती है। यहॉ की प्रमुख फसल गेहूँ ,जौ, राई हैं। इसमें खेतों का आकार विस्तृत होता है, तथा समस्त कार्य मशीनों के द्वारा किये जाते हैं। इस क्षेत्र यूरेशिया से स्टेपिज, अर्जेन्टाइना के पम्पाज, उत्तरी अमेरिका के प्रेयरीज तथा आस्ट्रेलिया के डाउन्स क्षेत्रों में की जाती है।

प्रस्तुतकर्ता– जगदीश प्रसाद (प्रवक्ता भूगोल) बी0डी0टी0रा0इ0का0गुरना पिथौरागढ, उत्तराखण्ड

5– मिश्रित कृषि– इस प्रकार की कृषि में कृषि के साथ–साथ पशुपालन भी किया जाता है। तथा फसलों का उत्पादन मनुष्य एवं पशुओं के लिए किया जाता है। खेतों का आकार मध्यम् होता है। यहॉ की प्रमख फसलें गेहूँ,जौ,राई,जई, मक्का एवं चारे की फसल प्रमुख है। प्रमुख पशुओं में मवेशी,भेड,सुअर,हैं।

6– डेयरी कृषि– इस तरह की कृषि में भी पूँजी की आवश्यकता होती है। दुधारू पशुओं की अधिक देखभाल की जाती है। पशुओं के स्वास्थ्य,प्रजनन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पशुओं को चराने,दूध निकालने के लिए सस्ते श्रमिकों की आवश्यकता पडती है। इस कृषि प्रयोग नगरीय एवं औद्योगिक नगरों के बीच किया जाता है, क्योकि ये क्षेत्र दूध एवं व्यापार के लिए अच्छे बाजार होते हैं।

इस कृषि का प्रमुख क्षेत्र पश्चिमी यूरोप, कनाडा ,न्यूजीलैंड,दक्षिण पूर्वी आस्ट्रेलिया एवं तस्मानिया हैं।

7– सहकारी कृषि– इस प्रकार की कृषि का सम्पूर्ण स्वामित्व कृषि समूह का होता है। इसमें पशुधन एवं श्रम को मिलाकर कार्य करते हैं। सरकार उत्पादन का वार्षिक मूल्य तय करती है। तथा कृषि उत्पादों को उसी आधार पर खरीदती है। इसमें अपने दैनिक उपयोग के लिए कृषक खेत का छोटा सा भाग अपने पास रखता है। सामूहिक कृषि सर्वप्रथम उपयोग सोवियत रूस ने किया।

खनन कार्य

खनिज खोजों की कई अवस्थाऐं देखी जाती हैं, जैसे– ताम्रयुग,लौहयुग। प्राचीन समय में खनिजों का उपयोग औजार बनाने,हथियार बनाने तथा बर्तन बनाने तक सीमित था। परन्तु औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् इसमें निरन्तर वृद्वि हुयी।

खनन मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है।– धरातलीय एवं भूमिगत। धरातलीय खनन भूमि के ऊपरी भाग में किया जाता है। यह सुरक्षात्मक है, इसमें अधिक खर्च एवं उपक्रम की आवश्यकता नही होती है। जबकि धरातल के नीचे वाले खनन को कूपकी खनन कहते है। इसमें धरातल के अन्दर गहराई तक पहुॅचने के लिए लिफ्ट वेधकों द्वारा गहरे छिद्र किये जाते हैं। जिसका प्रयोग कच्चा माल लाने एवं खनन मजदूरों को आने–जाने के लिए किया जाता हैं। इस खनन में सुरक्षा का अधिक ध्यान रखा जाता है। यह खनन अत्यधिक खर्चीला है।

प्रस्तुतकर्ता– जगदीश प्रसाद (प्रवक्ता भूगोल) बी0डी0टी0रा0इ0का0गुरना पिथौरागढ, उत्तराखण्ड